छोटूलाल ने भैंसपालन से बनायी अपने क्षेत्र में पहचान

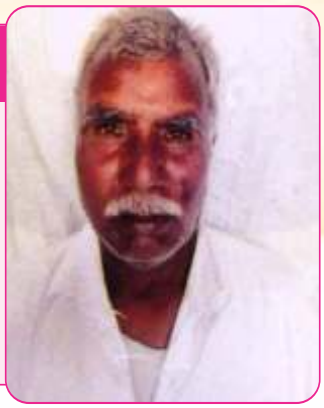

पशुपालक का नाम	:	श्री छोटूलाल
पिता का नाम	:	श्री बरधी लाल केवट
उम्र	:	70 साल
पता	:	रंगपुर, लाड़पुरा (कोटा)
शिक्षा	:	10 वीं
मोबाईल नं.	:	9928917749

छोटूलाल कोटा जिले के गांव–रंगपुर, तह. लाड़पुरा, जिला–कोटा के है जिन्होंने अपनी मेहनत से भैंसपालन के क्षेत्र में मिसाल कायम की। छोटूलाल के पास मात्र 2 बीघा जमीन है। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा ने रंगपुर गांव को ''मेरा गांव–मेरा गौरव'' के तहत गोद ले रखा है, अतः केन्द्र के वैज्ञानिक लगभग हर महीने इस गांव में प्रशिक्षण शिविर आयोजित करते हैं। प्रशिक्षण के दौरान सम्पर्क में आये छोटूलाल केवट के मन में पशुपालन को ओर अधिक बढ़ाने के बारे में बताया और वे निरन्तर पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा से सम्पर्क में रहे हैं। आज इनके पास लगभग 45 पशु हैं। अधिकांश उन्नत नस्ल की भैंसें हैं, जिनमें 12 भैंसें दूध प्रतिदिन 100 से 120 लीटर देती हैं। साथ ही 20 भैंसें ग्याभिन भी हैं, 1–3 वर्ष की 13 पशु हैं। इनके पास एक पाड़ा भी है जिससे ही अपनी भैंसों को गर्भाधान करवाते हैं, और कृत्रिम गर्भाधान भी करवाते हैं। इस कार्य से लगभग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 2 लोगों को रोजगार भी प्रदान कर रखा है। अब इनकी आय 1.5 लाख से बढ़कर 6 लाख रुपये वार्षिक हो गई है। दूध से होने वाली आमदनी से ही घर परिवार का सारा खर्चा, बच्चों की पढ़ाई आदि सब इस पर ही निर्भर है। जमीन कम होने से अधिकांश चारा खरीदना पड़ता है। पशुओं में होने वाली मौसमी बीमारियों से अपने पशुओं को बचाते हैं। प्राथमिक उपचार स्वयं कर लेते हैं जरूरत पड़ने पर पशुचिकित्सक की सेवाएं भी लेते हैं। ये पशुओं में होने वाली बीमारियों का पशुचिकित्सक से सम्पूर्ण ईलाज करवाते हैं, अंधविश्वास से बचते हैं। आज इनके पास अपना पक्का मकान है। पशुपालन से घर–परिवार की लगभग सभी जरूरतें पूरी करते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा इनको समय–समय पर पूरा सहयोग किया जाता है। आज छोटूलाल पशुपालन को अपनाने से खुशहाल जीवन जी रहे हैं। ये कहते हैं कि पशुपालन मेहनत का काम जरूर है, लेकिन इससे बहुत अधिक आर्थिक लाभ भी होता है। आज छोटूलाल अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के साथ–साथ पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा को देते हैं।

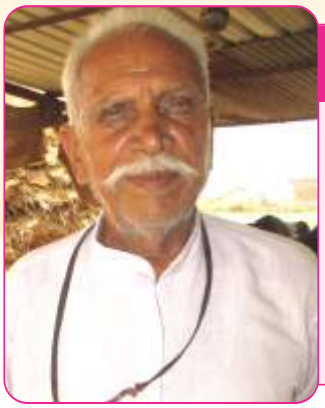

सफलता का प्रतीक बना पशुपालन व्यवसाय

पशुपालक का नाम	:	श्री रामनारायण कुशवाह
पिता का नाम	:	श्री शंकर लाल
उम्र	:	65 वर्ष
पता	:	खेड़ारसूलपुर, लाडपुरा (कोटा)
शिक्षा	:	प्राथमिक शिक्षा
मोबाईल नं.	:	9414661438

श्री रामनारायण ग्राम खेड़ारसूलपुर के पशुपालक ने कृषि एवं पशुपालन का उचित सामंजस्य बनाकर पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना लिया हैं। शुरूआत में कृषि व्यवसाय को ही ज्यादा महत्व देते थे। इनके पास जमीन 8 बीघा है, परिवार का खर्च और बच्चों की पढ़ाई–लिखाई आदि होने के कारण केवल मात्र इतनी कम जमीन में परिवार के खर्च में काफी समस्याएँ आती थी। इन्होंने कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी करना उचित समझा। इनके पास चार वर्ष पूर्व 4 भैंसें व गाय थीं। कुछ पशु खरीदकर भी लाए। आज इनके पास कुल 40 पशु हैं जिनमें से 8 भैंसें प्रतिदिन 55 लीटर दूध देती हैं व 4 गायें प्रतिदिन 25–30 लीटर दूध देती हैं। कुल 90–100 लीटर दूध प्रतिदिन का उत्पादन होता है। ये लगभग 6 लाख रुपये वार्षिक आय अर्जित कर लेते है। कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार होने के कारण ये इस तकनीक का प्रयोग अधिक करते हैं। जमीन कम होने के कारण हरा चारा तो अपने खेत में पैदा करते हैं बाकी सूखा चारा (भूसा/चावल की पुली) आदि को खरीदते भी हैं। रामनारायण भविष्य में गिर नस्ल की देशी भारतीय गौवंश पर काम करने की सोच रखते हैं। रामनारायण पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा से निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं।

उन्नत पशुपालन तकनीकों को अपनाकर सफल व्यवसायी बने जिनेन्द्र

पशुपालक का नाम	:	श्री जिनेन्द्र चौधरी
पिता का नाम	:	श्री सुखपाल सिंह
उम्र	:	47 वर्ष
पता	:	मालीपुरा, लाडपुरा (कोटा)
शिक्षा	:	स्नातक
मोबाईल नं.	:	9460981189

जिनेन्द्र सिंह चौधरी कोटा जिले के ग्राम मालीपुरा के प्रगतिशील एवं जागरूक पशुपालक ने कृषि एवं पशुपालन का उचित सामंजस्य बनाकर पशुपालन को व्यवसाय के साथ में अपनाकर सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना चुके हैं। 8 वर्ष पूर्व कुछ ही पशुओं से व्यवसाय शुरू किया था। इनके पास खेती की जमीन 5 बीघा हैं एवं एक सफल डेयरी व्यवसायी के साथ–साथ अपने आस–पास के क्षेत्र के गांवों में भी लोगों में काफी पहचान बना ली है। आस–पास के गांवो के लोग भी जितेन्द्र चौधरी से पशुपालन से सम्बंधित जानकारी व सलाह के लिए सम्पर्क में रहते हैं। वर्तमान में इनके पास छोटे–बड़े कुल 55 गौवंश हैं जिनमें 10 गिर नस्ल एवं 20 संकर नस्ल की गायें हैं। बाकी छोटे बड़े बछड़ा–बछड़ी हैं। गायों में ये गिर नस्ल की गायों को प्राथमिकता देते हैं। वर्तमान में 250 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित हो रहा हैं। उत्पादित दूध, शुद्वता के उचित मानक के साथ पैकिंग करके लोगों को पहुंचाते हैं। इनकी गायें लगभग 20–25 लीटर दूध प्रतिदिन देती है जिसमें गिर नस्ल की गाय 12–15 लीटर और संकर नस्ल की गायें 20–25 लीटर प्रतिदिन देती हैं। पशुपालन के कार्यो में सहयोग हेतु इन्होंने 05 लोगों को रोजगार भी दे रखा है। ये पशुओं को खुरपका, मुहंपका, गलघोंटू आदि संक्रामक बीमारियों का टीकाकरण वर्ष में 2 बार करवाते हैं। उन्नत पशुपालन तकनीकों जैसे कृमिनाशक दवा का उचित उपयोग, संतुलित पशु आहार, खनिज लवण मिश्रण, केल्शियम आदि तकनीकों को अपना रखा हैं। इनको डेयरी से मासिक आय लगभग 1.25 लाख रूपये है। जिनेन्द्र चौधरी, पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा समय–समय पर उचित परामर्श एवं आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हैं। ये अपने खेत में 2.5 बीघा में तो हरा चारा एवं बाकी 2.5 बीघा में दलहन फसलें करते हैं। जो इनके पशुओं के काम आते हैं। इनके मन में पशुपालन सम्बंधी ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा हमेशा रहती है। इनके मन में हमेशा से ही पशुपालन व डेयरी व्यवसाय के क्षेत्र में कार्य करने की इच्छा थी। ''ग्राम–2017 कोटा'' में भी इन्होंने भाग लिया व विभिन्न तकनीकों के बारे मे जानकारी ली। वहां इन्होंने उन्नत पशुपालन तकनीकों सहित हरें चारे का साईलेज बनाना, अजोला उत्पादन, हाइड्रोपोनिक्स तकनीक की जानकारी लेकर आये। ये दूध निकालने की मशीन सहित अन्य नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हैं। इनके पास गिर नस्ल का सांड है जो ये गुजरात से लाये थे। अब ये गिर नस्ल के सांड को खुद भी तैयार कर रहें हैं।

पशुपालन से अर्जित की आर्थिक और सामाजिक प्रतिष्ठा

पशुपालक का नाम	:	श्री सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम	:	श्री कन्हैया लाल गुर्जर
उम्र	:	35 वर्ष
पता	:	चण्डिदा, लाड़पुरा (कोटा)
शिक्षा	:	10वीं
मोबाईल नं.	:	8890897802

हम बात कर रहे हैं कोटा जिले के गांव–चण्डिदा, तह. लाड़पुरा, जिला–कोटा के सुरेन्द्र कुमार पुत्र कन्हैया लाल गुर्जर की। जिन्होंने अपनी मेहनत और पशुपालन के प्रति दृढ़ इच्छाशक्ति से आज एक सफल जागरूक और आर्थिक रूप से सुदृढ़ पशुपालक के रूप में पहचान बना चुके हैं। सुरेन्द्र कुमार के पास 12 बीघा कृषि भूमि है। पिछले 4 वर्षो से पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा के सम्पर्क में हैं। इन्होंने पशुपालन को एक वृहद् व्यवसाय के रूप में अपनाया है। इनका मानना है कि किसान कृषि के साथ–साथ पशुपालन अपनायें तो आर्थिक स्तर और मजबूत हो जाता है। वर्तमान में इनके पास लगभग कुल 200 पशु हैं जिनमें से 50 गौवंश व 150 भैंसें हैं। जिनमें 40 भैंसें प्रतिदिन 250 से 300 लीटर दूध देती हैं एवं 15 गायें प्रतिदिन 125 से 150 लीटर दूध देती हैं। सुरेन्द्र कुमार अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को अधिक महत्व देते हैं। इस कार्य से लगभग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 4 लोगों को रोजगार भी प्रदान कर रखा है। इनकी आय लगभग 8 से 9 लाख रुपये सालाना हो गई है। पशुओं के लिए चारा अपने खेत से जरूरत पड़ने पर खरीदते भी हैं। इनके पास चारा काटने की मशीन, साथ ही अजोला उत्पादन भी करते हैं। इन्होंने वर्मी कम्पोस्ट भी अपनाया हुआ है। अनुभव के आधार पर पशुओं में होने वाली मौसमी बीमारियों से अपने पशुओं को बचाते हैं। प्राथमिक उपचार पशुचिकित्सक की सलाह से स्वयं कर लेते हैं जरूरत पड़ने पर पशुचिकित्सक की सेवाएं भी लेते हैं। पशुपालन से घर–परिवार की लगभग सभी जरूरतें पूरी करते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा इनको समय–समय पर पूरा सहयोग किया जाता है एवं केन्द्र द्वारा बताई उन्नत तकनीकों को भी अपनाते हैं। सुरेन्द्र कुमार पशुपालन को अपनाने से खुशहाल जीवन जी रहे हैं। आज सुरेन्द्र कुमार अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के साथ–साथ पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा को देते हैं।

पशुपालन को दिया कोटा के महेश ने व्यवसाय का रूप

पशुपालक का नाम	:	श्री महेश मीणा
पिता का नाम	:	श्री हंसराज मीणा
उम्र	:	33 वर्ष
पता	:	डगारिया, दीगोद (कोटा)
शिक्षा	:	स्नातक
मोबाईल नं.	:	8209552682

कोटा के पशुपालक महेश मीणा ने कृषि एवं पशुपालन का उचित सामंजस्य बनाकर पशुपालन को व्यवसाय के साथ में अपनाकर सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना चुके हैं। ये शुरूआत में कृषि व्यवसाय को ही ज्यादा महत्व देते थे। लेकिन इनके मन में पशुपालन को अपनाने की प्रबल इच्छा थी। इनके पास 50 बीघा जमीन है। फिर इन्होंने कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी करना उचित समझा। चूंकि पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा इस गांव में पशुपालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा चुका था। इन्होंने शिविर के दौरान भी पशुपालन के बारे में जानकारी चाही थी। प्रशिक्षण के दौरान इनको सारी जानकारी विस्तृत से दी गयी थी। इनके पहले से 4 गाय–भैंस थी। कुछ पशु खरीद के भी लाए। आज इनके पास कुल 15 पशु हैं जिनमें से 11 भैंसें (दूध प्रतिदिन 50 लीटर) देती हैं व 4 गाय दूध (प्रतिदिन 20 लीटर) देती हैं। कुल 65–70 लीटर दूध प्रतिदिन का उत्पादन होता है। जिसकी बिक्री से 4–5 लाख रुपये वार्षिक अर्जित कर लेते है। इस कार्य के लिए इन्होंने 3 लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया हुआ है। कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार होने के कारण ये इस तकनीक का प्रयोग अधिक करते हैं। महेश मीणा भविष्य में गिर नस्ल की देशी भारतीय गौवंश के संवर्धन एवं उन्नयन की सोच रखते हैं। ये पशुओं में होने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार टीकाकरण अवश्य करवाते हैं तथा महेश मीणा पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा से निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं।